14 जुलाई 1999

साहित्य अकादेमी

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर

लेखक से भेंट

कुँवर नारायण

कुँवर नारायण का बचपन अयोध्या और फ़ैज़ाबाद में बीता। शिक्षा लखनऊ में हुई। उस समय के लखनऊ विश्वविद्यालय का शैक्षिक वातावरण बहुत समृद्ध और गरिमामय था। एक ओर अवध की ठेठ पृष्ठ-भूमि तो दूसरी ओर उन्हें प्रबुद्ध, विचारशील और समर्पित शिक्षकों और मित्रवर्ग का साथ मिला। लखनऊ में उन दिनों कॉफ़ी हाउस तथा लेखक संघ की बैठकें साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र में थी। उस गहमागहमी का असर दूरगामी रहा। वामपंथी और उदारवादी विचारों के बीच फर्क साफ़ दिखता था, पर दोनों के बीच कट्टर विभाजन न था। निजी स्तर पर लेखक बिरादरी एक थी।

पारिवारिक धन्धे में उनका मन बिल्कुल नहीं लगा। साहित्य में विकसित होती हुई रूचि ने आचार्य नरेन्द्रदेव और आचार्य कृपलानी से प्रोत्साहन पाया जो परिवार के सम्मानित सदस्यों की तरह माने जाते थे। क्योंकि व्यापार की दुनिया से कुँवर नारायण ने कभी अधिक नहीं चाहा, इसलिए शुरूआती वर्षों में थोड़ी कठिनाइयों और विरोध के बावजूद वे उसके बीच भी अपनी तरह से जीने के लिए एक कोना बना सके।

विवाह के बाद उनके जीवन में विशेष बदलाव आया। उनकी पत्नी भारती ने व्यावहारिक पक्ष को बहुत अच्छी तरह सँभाला और साथ ही उनके साहित्यिक जीवन में भी मूल्यवान सहयोग देती रही हैं। पढ़ना और लिखना कुँवर नारायण के जीवन में आनुषांगिक नही, केन्द्रीय स्थान रखते हैं। लिखते बराबर रहते हैं, लेकिन छपवाते कम हैं।

उनका पहला काव्य-संग्रह *चक्रव्यूह* 1956 में प्रकाशित हुआ। नयी कविता के प्रारम्भिक दौर में यह एक बहुचर्चित काव्य-संग्रह रह चुका है जिसने कवि को एक विशिष्ट पहचान दी। 1959 में अज्ञेय द्वारा सम्पादित *तीसरा सप्तक* में संकलित सात कवियों में शामिल किये गये। 1961 में *परिवेश: हम-तुम* काव्य-संकलन का प्रकाशन हुआ। मुक्तिबोध ने इस संग्रह की समीक्षा करते हुए लिखा था: "कवि कुँवर नारायण ने अपना एक शिल्प विकसित कर लिया है, जिसमें कहने की सादगी, संवेदना की तीव्रता, रंगों की गहराई और ख़यालों की लकीरें साफ़-साफ़ उभर कर आती हैं। . . . पूरा विचार-चित्र, सामने आ जाता है, जिसमें आत्म-पक्ष और वस्तु-पक्ष दोनों का सन्तुलनपूर्ण योग रहता है। कवि का जो कथ्य है, उसकी दृष्टि से देखा जाय तो उसका शिल्प सचमुच बहुत महत्वपूर्ण, सुबोध अर्थात सहजतापूर्वक हृदय-ग्राहय है। और यदि मैं

भोपाल में जगदीश स्वामीनाथन, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और अन्य मित्र — 1974

अपनी व्यक्तिगत शब्दावली में कहूँ तो, उसका तकनीक वस्तुत: जनतांत्रिक हैं।''

1965 में कठोपनिषद् के नचिकेता पर आधारित उनका सुप्रसिद्ध प्रबन्ध-काव्य *आत्मजयी* प्रकाशित हुआ। नचिकेता जिस मानसिक संघर्ष से गुज़रता है उसे आज के मनुष्य की मन: स्थितियों में भी पहचाना जा सकता है। मनुष्य ऐसे मूल्यों के लिए जीना चाहता है जो उसमें केवल सुख की ही नहीं सार्थकता की भी अनुभूति करा सकें। नचिकेता का पिता से मतभेद न केवल पुरानी और नयी पीढ़ी के संघर्ष का प्रतीक है बल्कि उन दृष्टिकोणों का भी जिन्हें हम अपने आज के जीवन में भी पाते है: एक ओर निरंतर भौतिक उन्नति और दूसरी ओर आत्मिक स्तर पर बढ़ता हुआ असंयम जो उस भौतिक प्रगति को अपने ही लिए अभिशाप बनाये ले रहा है। *आत्मजयी* इन अनेक प्रश्नों से सामना है। इसमें अन्तत: मृत्यु से भी बड़ा कुछ रच सकने की सर्जनात्मक क्षमता में मनुष्य-जीवन की सार्थकता को देखा गया है। यह रचना हिन्दी में एक मानक कृति के रूप में स्वीकृत हुई।

कहानी-संग्रह *आकारों के आसपास* से एक बिल्कुल अलग तरह की प्रतिभा पाठकों के सामने आई। नेमिचन्द्र जैन के अनुसार: "फैन्टेसी के साथ साथ कुँवर नारायण अपनी बात कहने के लिए तीखे व्यंग्य की बजाय हल्की विडम्बना या 'आयरनी' का इस्तेमाल अधिक करते हैं। इसी से उनके यहाँ फूहड़ अतिरंजना या अतिनाटकीयता नहीं है, एक तरह का सुरूचिपूर्ण संवेदनशील निजीपन है।''

एक लम्बे अन्तराल के बाद 1979 में कवि का बहुचर्चित कविता-संग्रह *अपने सामने* छपा, जिसका काव्यानुभव कवि की पिछली कविताओं से बिल्कुल भिन्न है। उसका मुहावरा अपने बिम्बविधान और कल्पनाशीलता में एक रोमान्टिक ऊर्जा रखते हुए भी क्लासिकी ढंग से अनुशासित और सुनियोजित है। विष्णु खरे ने इस संग्रह की समीक्षा करते हुए लिखा था: "कुँवर नारायण हिन्दी के उन विरले कवियों में से हैं जिन्होने स्वयं पर एक निर्मम नियंत्रण

वार्सा में लेखकों के साथ--1955

तथा संयम रख कर, अधिकतर ग़लत समझे जाने का जोखिम उठा कर भी बाह्य ही नहीं, आंतरिक प्रलोभनों से भी बच कर अपनी कठोरतम शर्तों पर अपनी कविता की रचना की है। . . . अतिवाद से अपने को बचाये रखना और तब भी अपनी कविता सुरक्षित रख पाना कुँवर नारायण सरीखे विरले सजग, समर्थ तथा सच्चे कवि के ही बूते की बात थी।''

अपने सामने के अनुभव को हम कवि के 1993 में प्रकाशित काव्य-संग्रह *कोई दूसरा नहीं* में और अधिक परिपक्व, परिमार्जित और बहुआयामी होते देखते हैं। *कोई दूसरा नहीं* का फलक बहुत विस्तृत और विविध होने के साथ-साथ भाषाई स्तर पर अधिक सुगम भी है और बहुस्तरीय भी। मिथक और इतिहास में कवि की गहरी रूचि, समकालीन सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ पर चुभती टिप्पणियाँ, तथा जीवन और मृत्यु के गहरे आत्मीय प्रसंगों को बहुत संवेदनशीलता से उकेरती पंक्तियाँ इस संग्रह को कवि की एक अत्यन्त प्रौढ़ और सफल रचना के रूप में हमारे सामने रखती हैं। ये कविताएँ सीधे इस बढ़ती हुई चिन्ता से जुड़ती हैं कि आज के मनुष्य की आज़ादी और अखण्डता की रक्षा कैसे हो — उन शक्ति-तंत्रों के मुकाबले में जिन्हे न तो वह देख पाता है न ठीक से समझ पाता है: जिनके सामने वह अपने को अकेला और असहाय अनुभव करता है।

कविताओं में यह चिन्ता भी उतनी ही तीव्र है कि आज की यांत्रिकता और उपभोक्ताप्रधान दुनिया में एक सामान्य व्यक्ति अपनी पहचान और अस्मिता को बरक़रार रखते हुए कैसे एक सम्मानित, सन्तुष्ट और ईमानदार जीवन जी सके। उनकी कविताओं में एक कोशिश है जीवन को खण्डों में नहीं उसकी समग्रता में देखने समझने की, और सरलीकृत ढंग से नहीं उसे उसकी पूरी जटिलता में प्रतिबिम्बित करने की।

1998 में कवि की पहली आलोचना-पुस्तक *आज और आज से पहले* प्रकाशित हुई। यह संचयन हिन्दी परिदृश्य पर पिछले चार दशकों से उनके सक्रिय बने रहने का साक्ष्य ही नहीं, उनकी दृष्टि की उदारता, रुचि की पारदर्शिता और व्यापक फलक का भी प्रमाण है।

कुँवर नारायण कई महत्वपूर्ण पत्रिकाओं के संपादन से जुड़े रहे हैं, विशेषकर *युगचेतना* जिसकी नयी कविता काव्यान्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है। निबन्धकार और समीक्षक के रूप में भी कवि ने साहित्य पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है। साहित्य, कलाओं, सिनेमा, नाटक, संस्कृति आदि पर उनके विचार-पूर्ण लेख अनेक संग्रहों और पत्रिकाओं में संकलित और प्रकाशित होते रहते हैं। विदेशी कवियों के उनके हिन्दी अनुवाद अत्यधिक पसन्द किए गए हैं, तथा उनकी स्वयं की कविताओं के अनेक अनुवाद भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। विशेष रूप से उल्लेखनीय है उनके *आत्मजयी* का प्रो० मरियोला ऑफ़ेदी द्वारा इतालवी भाषा में अनुवाद जो *नचिकेता* शीर्षक से रोम से प्रकाशित हुआ है। अंग्रेज़ी और जर्मन, पोलिश, जापानी तथा अन्य कई विदेशी भाषाओं में अनेक अनुवाद छप चुके हैं। कुँवर नारायण अपनी साहित्यिक संस्कृति के परिष्कार और समृद्धि में अन्य कलाओं जैसे सिनेमा, संगीत, नाटक और चित्रकला के योगदान को मानते हैं। वे उत्तर प्रदेश के 'भारतेन्दु नाट्य अकादमी' के अध्यक्ष तथा 'संगीत नाटक अकादमी' के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

इन दिनों वे अधिकतर दिल्ली रहते हैं। पूछने पर कि आज के जीवन में आप कविता की ज़रूरत को किस तरह देखते हैं, और आपके लेखन का प्रेरणा-स्त्रोत क्या है? उनका संक्षिप्त उत्तर था, "कविता हमारी भौतिक गतिविधियों के केन्द्र में नहीं है: वह हमारी नैतिक भावनाओं और आत्मिक जीवन के केन्द्र में है। इसीलिए वह केवल बाह्य का अवलोकन नहीं, अर्न्तदृष्टि और दूरदृष्टि भी है। कविता का प्रेरणा-स्त्रोत ठीक वहीं है जहाँ एक मनुष्य दूसरों के प्रति सबसे अधिक संवेदनशील है।"

वेनिस में प्रो० ऑफ़ेदी और अपूर्व के साथ — 1994

मुख्य प्रकाशन

काव्य-संग्रह

चक्रव्यूह : 1956
तीसरा सप्तक : 1959 (संकलन में)
परिवेश : हम-तुम : 1961
अपने सामने : 1979
कोई दूसरा नहीं : 1993

प्रबन्ध-काव्य

आत्मजयी : 1965

कहानी-संग्रह

आकारों के आसपास : 1972

समीक्षा

आज और आज से पहले : 1998
मेरे साक्षात्कार : 1999

अनुवाद

कवाफ़ी की कविताएं : 'तनाव' परिपत्र
बोर्ख़ेस की कविताएं : 'तनाव' परिपत्र

जीवन विवरण

1927 जन्म 19 सितम्बर। फ़ैज़ाबाद, (उ०प्र०)।

1938 मां और बड़ी बहन की असमय मृत्यु के बाद से लखनऊ रहे और वहीं अध्ययन।

1946-47 एक वर्ष मुंबई में आचार्य नरेन्द्र देव के साथ रहना हुआ। उनके सान्निध्य में साहित्य और दर्शन के प्रति गहरी रूचि बनी।

1951 लखनऊ विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एम०ए०। लखनऊ लेखक संघ की बैठकों में सक्रिय भागीदारी।

1952 "प्रतीक" में कविताओं और विदेशी अनुवादों का सर्वप्रथम प्रकाशन।

1954 पारिवारिक व्यवसाय में अरूचि। एक वर्ष दिल्ली में आचार्य कृपलानी के साथ, तथा उनकी "विजिल" पत्रिका में सहयोग।

1955 पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, रूस तथा चीन की विस्तृत यात्रा। इस दौरान

भारती के साथ

वॉर्सा में नाज़िम हिकमत, एन्टन स्वानीम्स्की तथा पाब्लो नेरुदा से भेंट का विशिष्ट अनुभव।

1956 प्रथम काव्य-संग्रह *चक्रव्यूह* का प्रकाशन।

1956-61 युगचेतना पत्रिका के सम्पादक-मण्डल में।

1959 *तीसरा सप्तक* में संकलित।

1961 *परिवेशः हम-तुम* प्रकाशित।

1965 *आत्मजयी* का प्रकाशन।

1966 भारती गोयनका से विवाह।

1967 पुत्र अपूर्व का जन्म।

1971 *आत्मजयी* पर हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार।

1972 *आकारों के आसपास* कहानी-संग्रह प्रकाशित, तथा उस पर हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश का 'प्रेमचन्द पुरस्कार'।

1974-78 नया प्रतीक तथा छायानट पत्रिकाओं के संपादक-मण्डल में।

1976-78 'उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी' के उपाध्यक्ष।

1977-79 'भारतेन्दु नाट्य अकादमी' के अध्यक्ष।

1976 *अपने सामने* प्रकाशित

1987 स्वीडेन के स्टॉक्होम, गोथेनबर्ग और लुण्ड विश्वविद्यालयों में काव्य-पाठ तथा सेमिनार में हिस्सेदारी।
उसके बाद फ्रान्स और इंग्लैण्ड में कुछ दिन भ्रमण।

1993 *कोई दूसरा नहीं* प्रकाशित।

1994 वेनिस विश्वविद्यालय में "आधुनिक हिन्दी कविता और मिथक" विषय पर बीस व्याख्यान।
तत्पश्चात् परिवार और मित्रों के साथ यूरोप और इटली का विस्तृत भ्रमण।
लौटते समय लन्दन के 'नेहरू सेन्टर' में काव्य-पाठ।
इसी दौरान अमरीका का भ्रमण।

1995 *कोई दूसरा नहीं* पर 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'व्यास सम्मान', तथा 'भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार' और भारतीय भाषा परिषद का 'शतदल पुरस्कार'।

1998 *आज और आज से पहले*— समीक्षात्मक लेखों का संग्रह प्रकाशित।
केम्ब्रिज में कुछ दिन, और 'नेहरू सेन्टर' में कविता-पाठ।

1999 *मेरे साक्षात्कार* प्रकाशित।

साहित्य अकादेमी के आयोजन 'काव्यार्धशती' में कविता पाठ: 1998